IJAER/June-July 2012/Volume-1/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

भारत में मूल्य आधारित शिक्षा: वर्तमान मुद्दे और चुनौतियां

डॉ0 पूनम सिंह
सह - आचार्य
शिक्षा विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ

सारांश

प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल्य आधारित थी। मूल्यों और नैतिक मुद्दों से निपटना शिक्षकों की भूमिकाओं के एक अभिन्न अंग के रूप में पहचाना जाता है। अब, दुनिया के सामाजिक, बौद्धिक और राजनीतिक परिवर्तन में शिक्षा की बहुत बड़ी भूमिका है। माता-पिता, समुदायों और सरकार ने हमेशा स्कूलों से ऐसे छात्रों को विकसित करने की अपेक्षा की है जो उस समाज में योगदान देंगे जिसमें वे रहते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने में प्रभावी शिक्षण प्रथाओं में कहानी कहने, प्रदर्शनियों, नाटकों, एक नाटक और समूह चर्चा से लेकर विभिन्न अन्य प्रारूपों तक शामिल हैं। डिजिटल (आईटी) युग में, शिक्षकों की उभरती भूमिकाओं पर पकड़ बनाना कठिन हो सकता है। ऐसा लग सकता है कि शिक्षकों की भूमिका बहुत बढ़ गई है; अब उनसे तकनीक-प्रेमी, कंप्यूटर साक्षर और शिक्षा के अत्याधुनिक होने की उम्मीद की जाती है। शिक्षार्थियों के बीच मूल्यों को विकसित करने के मामले में शिक्षकों की भूमिका अधिक चुनौतीपूर्ण और पुरस्कृत हो जाती है। एक शिक्षक द्वारा इन मूल्यों का उचित आत्मसात उनकी सकारात्मक भूमिका और निर्धारित साधनों के माध्यम से किया जा सकता है।

कीवर्ड: शिक्षा, मूल्य, भावी शिक्षक

परिचय

एक सामाजिक संस्था के रूप में शिक्षा मानव जाति के लिए समृद्धि का वरदान है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को मनुष्य को असत्य से सत्य की ओर अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने के मुख्य उद्देश्य के साथ मृत्यु से अमरता की ओर अग्रसर किया गया था। हर इंसान तटस्थ पैदा होता है और एक साफ स्लेट की तरह होता है और कोई मानसिकता नहीं होती है। मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली मानव बौद्धिक विकास का एक अभिन्न अंग है। मूल्य जीवन में गुणवत्ता जोड़ते हैं। मानवीय मूल्य मानव जीवन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। वे हमारे दिन-प्रतिदिन के कामों से

जुड़े हुए हैं। घर सीखने और मूल्यों के साथ विकसित होने का पहला स्थान है। स्कूल जगह है जिसमें आप मूल्यों का पोषण और जश्न मना सकते हैं। शिक्षा प्रणाली के एक अभिन्न अंग के रूप में शिक्षा का समाज से गहरा संबंध है। शिक्षण और सीखने में मूल्यों का समावेश ब्लूम के शैक्षिक उद्देश्यों के प्रसिद्ध वर्गीकरण के संज्ञानात्मक और प्रभावशाली डोमेन पर आधारित है। शिक्षा की राष्ट्रीय नीति (एनपीई), 1986, समाज में सामाजिक और नैतिक मूल्यों के पोषण के लिए शिक्षा को एक प्रमुख उपकरण बनाने की आवश्यकता पर विचार करती है। प्रोग्राम ऑफ एक्शन (1992) ने भी मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया और दस मुख्य तत्वों को स्कूली पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया। मूल्य आम तौर पर दीर्घकालिक मानक या सिद्धांत होते हैं जिनका उपयोग किसी विचार या क्रिया के मूल्य का न्याय करने के लिए किया जाता है। जॉन डेवी (1948) के अनुसार, "मूल्य का अर्थ है पुरस्कार देना, सम्मान करना, मूल्यांकन करना, अनुमान लगाना।" कुछ और के साथ तुलना में। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) दर्शाती है "शांति के लिए शिक्षा नैतिक विकास का पोषण करना चाहती है, प्रकृति सहित दूसरों के साथ स्वयं के साथ सद्भाव में रहने के लिए आवश्यक मूल्यों, दृष्टिकोण और कौशल को विकसित करना। मूल्य आधारित शिक्षा अनिवार्य रूप से 'मैन मेकिंग' है। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग दूसरों को मूल्यों का संचार करते हैं।

<u>मूल्य आधारित शिक्षा के उद्देश्य</u>

मूल्यों पर कुछ विशिष्ट उद्देश्य नीचे दिए गए हैं:

1. उस व्यक्ति का विकास करना जिसकी मानवतावादी और वैज्ञानिक ज्ञान की व्यापक पृष्ठभूमि हो।
2. विषय में शामिल सामग्री प्रक्रिया/गतिविधियों के लिए प्रासंगिक मूल्यों की पहचान करना।
3. आत्म-साक्षात्कार और दूसरों के सामान्य कल्याण के लिए उत्कृष्ट सेवाओं के लिए व्यक्तिगत कौशल और प्रतिभा विकसित करना।
4. छात्रों में नैतिक, आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना।
5. छात्रों को अपने स्वयं के मूल्यों के बारे में सोचने और उन्हें स्पष्ट करने और दूसरों के साथ उनकी तुलना करने के अवसर प्रदान करना।
6. शिक्षण सामग्री और पाठ योजनाएं विकसित करना जिससे मूल्यों को प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सके।
7. उन तरीकों की पहचान करना जिनमें शिक्षा कुछ सामाजिक मूल्यों जैसे सहिष्णुता, सहयोग की भावना और टीम वर्क को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता और महत्व

आज के बहु-सांस्कृतिक और बहु-नस्लीय समाज में, अपने बदलते सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं के साथ, एक युवा व्यक्ति के लिए यह जानना मुश्किल हो सकता है कि क्या सही है। अतः वैश्वीकरण के वर्तमान युग में मानवीय मूल्यों को महत्व देना आवश्यक है। मूल्य आधारित शिक्षा भारत में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत चर्चा का विषय है। बेशक यह सच है कि किसी भी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मूल्य अभिविन्यास के साथ होगा। मूल्य किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का एक सच्चा दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। वे हमें बताते हैं कि किसी समाज या राष्ट्र ने खुद को किस हद तक विकसित किया है। मूल्य वे गुण, आदर्श और गुण हैं जिन पर कार्य और विश्वास आधारित होते हैं। मूल्य मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो हमारे विश्व दृष्टिकोण, दृष्टिकोण और आचरण को आकार देते हैं। हालाँकि मूल्य या तो जन्मजात होते हैं या अर्जित किए जाते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा हर किसी की उस मूल्य प्रणाली को सुधारने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है जो उसके पास है और जिसका वह उपयोग करता है। जीवन में विभिन्न प्रकार की नैतिकता, जैसे सांस्कृतिक, सार्वभौमिक, व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को बनाते हैं और व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवता के विकास को तय करते हैं।

हमारे सांस्कृतिक रूप से बहुल समाज में, शिक्षा को ऐसे मूल्यों की एकता और एकीकरण की ओर उन्मुख सार्वभौमिक और शाश्वत मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए। भारतीय समाज में नैतिक और नैतिक मूल्यों का तेजी से क्षरण हुआ है। समय की मांग है कि सक्षम, प्रतिबद्ध और पेशेवर रूप से योग्य शिक्षक हों जो समाज की मांगों को पूरा कर सकें। पिछली शताब्दी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई प्रगति और इसमें निहित तर्कसंगत जांच ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को तेज कर दिया है और दुनिया को एक वैश्विक गांव बना दिया है। आज का विश्व हिंसा, लोभ, लूटपाट, जबरन वसूली, घृणा और ईर्ष्या से छिन्न-भिन्न हो गया है। सब नाम, सत्ता और पैसे के लिए लड़ रहे हैं। मनुष्य के सामाजिक-सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन को व्यक्ति और समाज दोनों के लिए शांति, प्रगति और कल्याण लाना है। यही कारण है कि आधुनिक समाज मूल्यों के ह्रास से चिंतित है।

किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में शिक्षक अपने प्रभाव के माध्यम से शैक्षिक प्रणाली में बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम सभी ने जिस शिक्षा का अनुभव किया है वह आज के शिक्षार्थी को वैश्विक बाजार के लिए तैयार करने के लिए उपयुक्त नहीं है। भारत में बहुत युवा आबादी है और यह बहुत तेज गति से बढ़ रहा है। आज, शिक्षण संस्थान

शिक्षण-अधिगम वातावरण को बनाए रखने में विफल हैं। आज एक शिक्षक की भूमिका एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक की है, जबकि उसकी मुख्य जिम्मेदारी वर्तमान पीढ़ी के बीच जीवन के उच्च मूल्यों की बहाली में है।

स्कूल में शिक्षा, विद्यार्थियों के बीच संबंध, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों आदि के माध्यम से मूल्य अर्जन लगातार चलता रहता है। इसलिए बच्चों के बीच मानवतावाद, समाजवाद और राष्ट्रीय एकता के बुनियादी मूल्यों को विकसित करने में शिक्षा की प्रमुख भूमिका है और यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य प्रस्तुत करता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो शिक्षकों का पोषण करती है और निरंतर व्यावसायिक विकास के रूप में योग्य शिक्षकों के ज्ञान और कौशल को अद्यतन करती है। यदि हम अपनी वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को मूल्य क्षरण से बचाना चाहते हैं, तो दुख की बात है कि आज हमारे जीवन से 'सादा जीवन और उच्च विचार' का आदर्श गायब हो गया है। इस महत्वपूर्ण मोड़ पर एक शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह शिक्षक ही है जो अपने विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा प्रदान कर सकता है।

<u>विद्यार्थियों में मूल्यों का समावेश</u>

बच्चों में अच्छे इंसान बनने के लिए मूल्यों को विकसित करने के लिए शिक्षक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उदय ने न केवल हमारे जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को बर्बाद कर दिया है बल्कि हमारे दिलों में विचार रखने वाली सूक्ष्म संवेदनाओं को भी छीन लिया है। मूल्य आधारित दृष्टिकोण को शैक्षिक प्रणाली और शिक्षक शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी बनाना चाहिए। आज हम बहुत सी समस्याओं का सामना कर रहे हैं जैसे- आतंकवाद, गरीबी और जनसंख्या की समस्या। पाठ्यचर्या में नैतिक मूल्यों का समावेश आवश्यक है। इसलिए, निम्नलिखित प्रस्तावित तरीके हैं जिनके द्वारा कक्षा शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों के बीच मूल्यों को आत्मसात किया जा सकता है:

- शिक्षा को छात्रों को जीवन के आदर्शों और उन्हें प्रभावित करने के लिए देश के सामाजिक लोकाचार के बारे में सूचित करना चाहिए।
- मूल्य आधारित शिक्षा को पाठ्यपुस्तक सामग्री द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता है, लेकिन सीखने के संसाधनों को खोजने में शिक्षकों की पहल और प्रेरणा पर छोड़ दिया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को छात्रों के बीच ज्ञान और नैतिक मूल्यों का विकास करना चाहिए और शिक्षाप्रद वातावरण बनाना चाहिए जो साथी शिक्षकों के बीच भाईचारा पैदा कर सके।

- मूल्यों को अलग-अलग नहीं पढ़ाया जा सकता है लेकिन शिक्षक अनुभव और परिस्थितियाँ प्रदान कर सकते हैं जिसमें छात्र मूल्यों पर विचार कर सकते हैं और प्रतिबिंबित कर सकते हैं और इस प्रतिबिंब को क्रिया में बदल सकते हैं।
- शिक्षकों को उन मूल्यों पर विचार करना चाहिए जो वैज्ञानिक प्रयासों को कम करते हैं और इन मूल्यों को प्रतिबिंबित करने वाले पाठ्यक्रम और विधियों को तैयार करने का प्रयास करते हैं।
- वर्तमान समय में आस्था, विश्वास, भाईचारा, वफादारी, आपसी सहयोग, निष्पक्ष खेल, त्याग, कानून का पालन, की इमारत भौतिकवाद के बोझ तले तेजी से ढह रही है।
- शिक्षक को सभी ज्ञान का स्रोत और महान आदर्शों का स्रोत माना जाता है। वह समाज के पथ प्रदर्शक हैं। इसलिए यदि शिक्षक में मूल्यों की गहरी समझ है और जीवन के उच्च उद्देश्य में विश्वास है, तो वह अपने बहुमुखी व्यक्तित्व के माध्यम से पूरी पीढ़ी का मार्गदर्शन कर सकता है।
- नैतिक मूल्यों को कहानियों और दृष्टांतों के माध्यम से समझाया जा सकता है। पाठ में एक अच्छी कहानी की भूमिका निभाना। कविता, उपन्यास और कहानियों के माध्यम से हम छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं।
- छात्रों में तन और मन की खातिर मानवीय मूल्यों को संस्कारित करने की आवश्यकता है। इसलिए, मूल्य आधारित शिक्षा तर्कसंगत पूछताछ और आत्म-खोज की भावना विकसित करने की प्रक्रिया होनी चाहिए।
- मूल्य आधारित शिक्षा सबसे प्रभावी होती है जब शिक्षक एक आदर्श के रूप में कार्य करता है और यह सुनिश्चित करता है कि यह स्कूल के दर्शन के केंद्र में है।
- शिक्षकों को जातीयता, लिंग, वैवाहिक स्थिति, राजनीतिक या धार्मिक विश्वासों, पारिवारिक, सामाजिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, यौन अभिविन्यास, या सभी की सामाजिक आर्थिक स्थिति के संबंध में निष्पक्ष और बिना किसी पूर्वाग्रह के आचरण करना चाहिए।
- पाठ की विषयवस्तु मूल्योन्मुखी होनी चाहिए। सभी मूल्यों को एक उपयुक्त रूप से तैयार भाषा पाठ और पूरक पाठकों के माध्यम से आत्मसात और विकसित किया जा सकता है।
- एक शिक्षक स्कूल में और स्कूल के बाहर हर जगह एक शिक्षक होता है। मूल रूप से यह उसके व्यवहार में परिलक्षित होना चाहिए।

- विद्यार्थियों का सम्मान करने और यह सुनिश्चित करने पर जोर दिया जाना चाहिए कि उनकी बार-बार आलोचना न हो। आत्मनिरीक्षण मूल्यों की तुलना में एक स्कूल की स्थापना के लिए केंद्रीय है।
- बच्चों की शिक्षा में मूल्य सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। यह स्वीकार करते हुए कि मूल्य चरित्र निर्माण की कुंजी हैं। मजबूत मूल्य और सामाजिक-भावनात्मक क्षमताएं बच्चे को किसी भी क्षेत्र में सफल होने में मदद करेंगी।

निष्कर्ष

छात्रों में नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मूल्यों के लिए शिक्षा को इच्छा, प्रतिबद्धता और परिवर्तन और परिवर्तन की आशा के साथ आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। हमारी भारतीय परंपरा और संस्कृति के अनुसार शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानवीय मूल्यों के बिना हम दुनिया में शांतिपूर्ण तरीके से जीवित नहीं रह सकते हैं और हम जीवन का आनंद नहीं ले सकते हैं। मूल्यों के क्षरण के वैश्विक परिदृश्य में, समाज में ऐसे व्यक्तियों का होना मुश्किल होगा जो मूल्य ह्रास की प्रक्रिया को रोकने का प्रयास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि चरित्र शिक्षा सहित नैतिक और नैतिक मुद्दों को शिक्षा कार्यक्रमों का हिस्सा बनने की बहुत आवश्यकता है। शिक्षकों के लिए व्यावसायिक नैतिकता अपने आप में शिक्षकों के लिए मूल्य आधारित शिक्षा का एक संपूर्ण कार्यक्रम है। संक्षेप में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एक शिक्षक भविष्य के शिक्षकों का शिक्षक होता है जिसका अर्थ है बहुत अधिक जिम्मेदारी। इसलिए, सतत मानव विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है।

संदर्भ

- अग्रवाल जे.सी. (2005) मूल्यों, पर्यावरण और मानवाधिकारों के लिए शिक्षा। नई दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन,
- हसीन ताज (2005) शिक्षा में वर्तमान चुनौतियां। हैदराबाद: नीलकमल प्रकाशन प्रा। लिमिटेड
- एन. रामनाथ किशन (2007) शिक्षक शिक्षा में वैश्विक रुझान। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2011) स्कूलों में मूल्यों के लिए शिक्षा - एक रूपरेखा। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- साहू, पी.के., यादव, डी. और दास, बी.सी. (2010) शिक्षक शिक्षा में व्यावसायिकता। नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.
- गुलाटी, एस. (2004) मूल्य शिक्षा पर शिक्षण तकनीक। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- वेंकटैया (1998) मूल्य शिक्षा। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
- प्रेम सिंह, जी.जे. (2004) मूल्य आधारित शिक्षा की ओर। विश्वविद्यालय समाचार। वॉल्यूम। 42 (45): पी.11-12।